औदारिक शरीर

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

शरीर वह साधन है जिसके माध्यम से कोई भी जीवित प्राणी कार्य करता है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी प्राणी शरीर से कार्य करते हैं। भौतिक शरीर औदारिक शरीर है। यह जन्म लेता है और मरता है। मनुष्य का शरीर औदारिक शरीर कहलाता है। औदारिक शरीर कार्मण होता है। जलचर, नभचर, पश–पक्षी सभी औदारिक शरीर वाले होते हैं। गाय का बछड़ा जन्म लेते ही दौड़ने लगता है। यह पौतज है। औदारिक शरीर चमड़े से ढका रहता है। मानव के शरीर के ऊपर चमड़ा है। इस चमड़ी के भीतर रक्त, मांस, मज्जा, हड्डी आदि अनेक तत्व हैं।

औदारिक शरीर ही मुक्ति को जा सकता है। मनुष्य एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। वह मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। औदारिक शरीर जड़ रूप है। आत्मा के साथ जुड़ने से यह चेतन की तरह कार्य करता है। मानव का जीवन अति दुर्लभ है। इस शरीर से महापुरुषों के प्रवचन सुनना, अच्छे साहित्य का पठन करना और ईश्वर में विश्वास आदि कुछ ऐसे कार्य हैं जिससे मनुष्य को मुक्ति मिल सकती है। औदारिक शरीर नाम कर्म से मिलता है। वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, सुगन्ध, दुर्गन्ध इसमें रहता है। स्त्री और पुरुष के संयोग से इस शरीर का जन्म होता है। इस शरीर के अन्तर्गत जीवात्मा विराजमान रहता है। इस शरीर में अनेक लगभग साठ खरब कोशिकाएं रहती हैं वही शरीर का संचालन करती है। जीव शरीरी है किन्तु आत्मा अशरीरी। शरीर मनुष्यों का होता है और आत्मा अशरीरी है।

जन्म और मृत्यु शाश्वत सत्य है। प्रश्न उठता है कि जन्म और मृत्यु आत्मा का होता है या शरीर का? आत्मा अजर–अमर अविनाशी है। आत्मा न तो मरता है और न जन्म लेता है। यह शाश्वत है। शरीर ही जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़ता है। जन्म और मरण से आत्मा का अस्तित्व नहीं मिलता। ये तो आत्मा की अवस्थाएं हैं। सांसारिक जीवों की मुख्य चार भव स्थितियां है– नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति।

जीव अपने किये हुए कर्मों के अनुसार एक गति से दूसरे गति में परिवर्तित होते रहते हैं। एक ही जीव अच्छे या बुरे कर्म के अनुसार कभी मनुष्य, कभी देवता, कभी तिर्यंच और कभी नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप जीव देवगति और मनुष्य गति में जन्म पाता है और बुरे कर्म के परिणामस्वरूप जीव तिर्यंच और नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। मनुष्य पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े, वृक्ष आदि औदारिक शरीर वाले होते हैं। इस शरीर की रचना स्थूल पुद्गलों से होती है। मोक्ष की प्राप्ति औदारिक शरीरों से हो सकती है। औदारिक शरीर में हाड़, मांस, रक्त, वसा, मज्जा आदि होते हैं।

मनुष्य चारों गतियों में जा सकता है। पेड़–पौधे और तिर्यंच गति के जीव उसी गति में जन्म लेते हैं जहा वे उत्पन्न हुए हैं। मानव यदि अच्छा कर्म करता है तो देवलोक में जा सकता है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो नरक योनि में जाता है। धर्मध्यान करना सबके प्रति प्रमोद भावना रखना अपने समान अन्य जीवों को समझने वाला, सदाचार करने वाला मानव योनि में जन्म लेता है। कर्मशास्त्र का यह सिद्धांत है कि जैसी करनी वैसी भरनी अर्थात् मनुष्य जैसा करता है वैसा ही उसके साथ होता है।

सब प्राणी, सब भूत, सब जीव और सब सत्त्व नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होते हैं। ये प्राणी वहीं स्थिति और वृद्ध को प्राप्त करते हैं। वे शरीर से उत्पन्न होते हैं, शरीर में रहते हैं और शरीर में वृद्ध को प्राप्त करते हैं और शरीर का आहार ग्रहण करते हैं। वे कर्म के अनुगामी हैं। कर्म ही उनकी उत्पत्ति, स्थिति और गति आदि का कारण है। वे कर्म के प्रभाव से ही विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं। प्राणियों की उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है। उनकी एक करोड़ सतानवें लाख पचास हजार जातियां हैं।

एक योनि में अनेक जातियां होती है। जैसे गोबर एक योनि है, उसमें कृमिकुल, कीटकुल, वृश्चिककुल आदि अनेक जातियां है। सम्पूर्ण जीव योनि षट्कायिक जीवों में विभक्त है। इनमें पृथ्वीकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, अप्कायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, तेजसकायिक जीवेां का उत्पत्ति स्थान सात लाख, वनस्पतिकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान चौवीस लाख, द्वीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, त्रीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, चतुरिन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों का

उत्पत्ति स्थान चार लाख, मनुष्य योनि चौदह लाख, नारक जीव चार लाख, देव योनि चार लाख। इस प्रकार पृथ्वीकायिक से लेकर देव योनि तक सम्पूर्ण जीवों का उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है।

जीवन क्या है? सचेतन और अचेतन में क्या अंतर है? जैन दर्शन के अनुसार चेतना और भौतिक शरीर की संयुक्त अवस्था को जीवन कहते हैं। जीवित दशा में स्थूल भौतिक शरीर के साथ एक सूक्ष्म चेतन जुड़ा रहता है। भौतिक शरीर से इसका पार्थक्य ही मृत्यु है। जब तक बंधन से मुक्ति नहीं मिलती तब तक आत्मा कर्म से बंधा रहता है। मृत्यु होने पर आत्मा से कार्मण शरीर ही पृथक् होता है। इसलिए यह कर्म ही भौतिक शरीर संरचना के प्रति उतरदायी है।

शरीर वह साधन है जिसके माध्यम से कोई भी जीवित प्राणी कार्य करता है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी प्राणी शरीर से कार्य करते हैं। भौतिक शरीर औदारिक शरीर है। यह जन्म लेता है और मरता है। मनुष्य का शरीर औदारिक शरीर कहलाता है। औदारिक शरीर कार्मण होता है। जलचर, नभचर, पश–पक्षी सभी औदारिक शरीर वाले होते हैं। गाय का बछड़ा जन्म लेते ही दौड़ने लगता है। यह पौतज है। औदारिक शरीर चमड़े से ढका रहता है। मानव के शरीर के ऊपर चमड़ा है। इस चमड़ी के भीतर रक्त, मांस, मज्जा, हड्डी आदि अनेक तत्व हैं।

औदारिक शरीर ही मुक्ति को जा सकता है। मनुष्य एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। वह मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। औदारिक शरीर जड़ रूप है। आत्मा के साथ जुड़ने से यह चेतन की तरह कार्य करता है। मानव का जीवन अति दुर्लभ है। इस शरीर से महापुरुषों के प्रवचन सुनना, अच्छे साहित्य का पठन करना और ईश्वर में विश्वास आदि कुछ ऐसे कार्य हैं जिससे मनुष्य को मुक्ति मिल सकती है। औदारिक शरीर नाम कर्म से मिलता है। वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, सुगन्ध, दुर्गन्ध इसमें रहता है। स्त्री और पुरुष के संयोग से इस शरीर का जन्म होता है। इस शरीर के अन्तर्गत जीवात्मा विराजमान रहता है। इस शरीर में अनेक लगभग साठ

खरब कोशिकाएं रहती हैं वही शरीर का संचालन करती है। जीव शरीरी है किन्तु आत्मा अशरीरी। शरीर मनुष्यों का होता है और आत्मा अशरीरी है।

जन्म और मृत्यु शाश्वत सत्य है। प्रश्न उठता है कि जन्म और मृत्यु आत्मा का होता है या शरीर का? आत्मा अजर–अमर अविनाशी है। आत्मा न तो मरता है और न जन्म लेता है। यह शाश्वत है। शरीर ही जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़ता है। जन्म और मरण से आत्मा का अस्तित्व नहीं मिलता। ये तो आत्मा की अवस्थाएं हैं। सांसारिक जीवों की मुख्य चार भव स्थितियां है– नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति।

जीव अपने किये हुए कर्मों के अनुसार एक गति से दूसरे गति में परिवर्तित होते रहते हैं। एक ही जीव अच्छे या बुरे कर्म के अनुसार कभी मनुष्य, कभी देवता, कभी तिर्यंच और कभी नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप जीव देवगति और मनुष्य गति में जन्म पाता है और बुरे कर्म के परिणामस्वरूप जीव तिर्यंच और नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। मनुष्य पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े, वृक्ष आदि औदारिक शरीर वाले होते हैं। इस शरीर की रचना स्थूल पुद्गलों से होती है। मोक्ष की प्राप्ति औदारिक शरीरों से हो सकती है। औदारिक शरीर में हाड़, मांस, रक्त, वसा, मज्जा आदि होते हैं।

मनुष्य चारों गतियों में जा सकता है। पेड़–पौधे और तिर्यंच गति के जीव उसी गति में जन्म लेते हैं जहा वे उत्पन्न हुए हैं। मानव यदि अच्छा कर्म करता है तो देवलोक में जा सकता है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो नरक योनि में जाता है। धर्मध्यान करना सबके प्रति प्रमोद भावना रखना अपने समान अन्य जीवों को समझने वाला, सदाचार करने वाला मानव योनि में जन्म लेता है। कर्मशास्त्र का यह सिद्धांत है कि जैसी करनी वैसी भरनी अर्थात् मनुष्य जैसा करता है वैसा ही उसके साथ होता है।

सब प्राणी, सब भूत, सब जीव और सब सत्त्व नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होते हैं। ये प्राणी वहीं स्थिति और वृद्ध को प्राप्त करते हैं। वे शरीर से उत्पन्न होते हैं, शरीर में रहते हैं और शरीर में वृद्ध को प्राप्त करते हैं और शरीर का आहार ग्रहण करते हैं। वे कर्म के अनुगामी हैं। कर्म ही उनकी उत्पत्ति, स्थिति और गति आदि का कारण है। वे कर्म के प्रभाव

से ही विभिन्न अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं। प्राणियों की उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है। उनकी एक करोड़ सतानवें लाख पचास हजार जातियां हैं।

एक योनि में अनेक जातियां होती है। जैसे गोबर एक योनि है, उसमें कृमिकुल, कीटकुल, वृश्चिककुल आदि अनेक जातियां है। सम्पूर्ण जीव योनि षट्कायिक जीवों में विभक्त है। इनमें पृथ्वीकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, अप्कायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान सात लाख, तेजसकायिक जीवेां का उत्पत्ति स्थान सात लाख, वनस्पतिकायिक जीवों का उत्पत्ति स्थान चौवीस लाख, द्वीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, त्रीन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, चतुरिन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान दो लाख, तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति स्थान चार लाख, मनुष्य योनि चौदह लाख, नारक जीव चार लाख, देव योनि चार लाख। इस प्रकार पृथ्वीकायिक से लेकर देव योनि तक सम्पूर्ण जीवों का उत्पत्ति स्थान चौरासी लाख है।

जीवन क्या है? सचेतन और अचेतन में क्या अंतर है? जैन दर्शन के अनुसार चेतना और भौतिक शरीर की संयुक्त अवस्था को जीवन कहते हैं। जीवित दशा में स्थूल भौतिक शरीर के साथ एक सूक्ष्म चेतन जुड़ा रहता है। भौतिक शरीर से इसका पार्थक्य ही मृत्यु है। जब तक बंधन से मुक्ति नहीं मिलती तब तक आत्मा कर्म से बंधा रहता है। मृत्यु होने पर आत्मा से कार्मण शरीर ही पृथक् होता है। इसलिए यह कर्म ही भौतिक शरीर संरचना के प्रति उतरदायी है।